e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 3, March 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 3, March 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1203019 |

ध्रुवस्वामिनी और अंतर्द्वंद्व

डॉक्टर संगीता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
दयानंद पीजी कॉलेज हिसार

मूल शब्द:- शास्त्रोचित, शोषित और पद दलित, नारी जीवन के विद्रोह, राजमहिषी, नियति के कुचक्र ,प्रेम के प्रतिस्वरूप प्रतिशोध का बदला ,निष्ठुर विधान ,आलिंगन के सुख की मादकता, नियति का अज्ञात भाव ,अनुभूतिपूर्ण स्वतंत्र व्यक्तित्व, अत्याचारों का अंतर्द्वंद्व, दुर्दशा को भिक्षा से उपकृत करना, मानवत्व पर रीझकर, पुरुष मूर्ति की पुजारिन, दर्प से दीप्त, प्रणय की देवी ,विधाता का विचित्र विधान।

ध्रुवस्वामिनी नाटक का सार

ध्रुवस्वामिनी जयशंकर प्रसाद की एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक नाट्य कृति है ।जिसमें लेखक ने नारी की समस्या को उजागर किया है। इस नाटक के केवल तीन अंक है, तीन अंकों में केवल तीन ही दृश्य है, कथावस्तु अत्यन्त सुगठित है और तीव्र गति से आगे बढ़ती है। नाटक आरम्भ, कार्य व्यापार की तीव्रता और उसके विकास का गठन अत्यन्त सुन्दर बन पड़ा है। नाटक में कहीं भी कथा को अवरोध नहीं आता। नाटक के प्रमुख तत्व कौतुहल की कमी कहीं भी खटकने नहीं पाती। ध्रुवस्वामिनी लिच्छवि राज की कन्या थी । सम्राट समुद्रगुप्त के पुत्र चन्द्रगुप्त को वह विजयोपहार के रूप - में दी गई थी। चन्द्रगुप्त सच्चे अर्थों में वीर था। किन्तु सम्राट समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात् परिषद् के निर्णय और अमात्य शिखरस्वामी की नीति के फलस्वरूप ध्रुवस्वामिनी का विवाह समुद्रगुप्त के बड़े पुत्र रामगुप्त से हो गया। समुद्रगुप्त ने चन्द्रगुप्त की वीरता और पराक्रम पर मुग्ध होकर राज्याधिकार भी उसे ही सौपा था परन्तु न उसे ध्रुवस्वामिनी मिली, न राज्य सिंहासन। रामगुप्त दुर्बल, कायर और क्लीव था वह हिजड़ों-बौनों के नृत्य में डूबा रहता था। ध्रुवस्वामिनी का चन्द्रगुप्त के प्रति स्वाभाविक आकर्षण और अनुराग था किन्तु उसका विवाह रामगुप्त के साथ हो गया। रामगुप्त को अपनी पत्नी के आचरण पर सन्देह हो गया। खड्‌गधारिणी (दासी) ने धुवस्वामिनी के चन्द्रगुप्त के प्रति प्रेम को छल कपट से जानकर रामगुप्त को बता दिया था। इससे वह अत्यधिक क्रोधित और कठोर हो गया। इसी समय शकों के अधिपति शकराज ने रामगुप्त को सूचना भेजी कि या तो वह उसके लिए अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी और उसके सामन्तों के लिए अपने सामन्तों की पत्नियों को उपहार स्वरूप भेज दे अन्यथा युद्ध करने के लिए तैयार हो जाए। रामगुप्त ध्रुवस्वामिनी से मुक्ति चाहता था। अपने राज्य की रक्षा वह युद्ध करके नहीं कर सकता था। उसके अमात्य ने यही राय दी थी कि राज्य की रक्षा किसी भी कीमत पर राजा को करनी ही चाहिए। बेचारी ध्रुवस्वामिनी लाख रोयी, गिड़गिड़ाई पर उसकी कौन सुनता वह रामगुप्त के विलास की सहचरी भी होने को तैयार होती है। किन्तु शक शिविर में जाना पसन्द नहीं करती। मद्‌ध्प रामगुप्त किसी भी स्थिति में उसे रखना नहीं चाहता था। हार कर धुवस्वामिनी कटार मार कर अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करना चाहती थी। तभी चन्द्रगुप्त आ गया, उसने उसे मरने से, आत्महत्या करने से रोका।

अन्त में धुवस्वामिनी शक शिविर में जाने को तैयार होती है। चन्द्रगुप्त भी नारी वेश में उसके साथ ही जाता है। घुवस्वामिनी शकराज

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 3, March 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1203019 |

से एकान्त में अकेले मिलने का अनुरोध करती है । शकराज कामलिप्त था। वह तैयार हो गया। एकान्त पाकर चन्द्रगुप्त उससे युद्ध करता है और उसकी हत्या कर डालता है। शकराज की सेना छिन्न-भिन्न हो जाती है। शकराज की प्रेमिका कोमा थी ।वह अपने पिता मिहिरदेव के साथ उसकी लाश लेने गई। ध्रुवस्वामिनी ने लाश दे दी पर रामगुप्त के सैनिकों ने उन दोनों की भी हत्या कर दी। इससे अन्य सामन्तों को रामगुप्त से घृणा हो गई। अन्त मे सबने मिलकर चन्द्रगुप्त को राजा और ध्रुवस्वामिनी को राजमहिषी होने की घोषणा की। राजपुरोहित ने भी रामगुप्त से ध्रुवस्वामिनी के सम्बंध को शास्त्रोचित बताया । ऐसी स्थिति में रामगुप्त चन्द्रगुप्त पर कटार का प्रहार करने को तैयार हो जाता है। उसी समय पीछे से एक सामन्त ने रामगुप्त पर प्रहार करके उसका वध कर दिया। इस प्रकार चन्द्रगुप्त सम्राट और ध्रुवस्वामिनी महादेवी हुई। प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटक में प्रमुख पात्र ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त, रामगुप्त, शिखर स्वामी, शकराज, मिहिरदेव, मन्दाकिनी, कोमा और पुरोहित हैं। ध्रुवस्वामिनी इस नाटक की प्रधान नारी पात्र है। ध्रुवस्वामिनी नाटक का नामकरण भी इसी पात्र के आधार पर रखा गया है। ध्रुवस्वामिनी नारी पर पुरुष जाति के अत्याचार और उससे मुक्ति की कहानी है। उसका चरित्र एक प्रकार से शोषित और पददलित नारी जीवन के विद्रोह, संघर्ष और मुक्ति का प्रतीक बनकर आया है। प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटक के नारी पात्रों में अन्तर्द्वन्द्व के अनेक उदाहरण विद्यमान हैं। जिनका यहां विस्तार से वर्णन किया जा रहा है।

ध्रुवस्वामिनी ओर अअंतर्द्वंद्

ऐतिहासिक नाटक ध्रुवस्वामिनी में हम नारी को एक नवीन रूप में देखते है। यह नारी जो पुरूषों के मनबहलाव को सामग्री समझी जाती रही है सदा से पुरुषों द्वारा उत्पीड़ित और प्रताड़ित की गई है। जीवन के पग-पग पर जिसे भर्त्सना और पराजय ही मिली है वही नारी इस में हमारे सम्मुख आती है। ध्रुवस्वामिनी नारी पर पुरुष जाति के अत्याचार और उससे मुक्ति की कहानी है। धुवस्वामिनी नाटक में तीन नारी पात्र है। तीनों अपने ढंग के विशिष्ट पात्र है। जिसके दृष्टिकोण स्वभाव, आदर्श आदि में परिवर्तन नहीं होता लेकिन तीनों ही पात्र प्रेम के लिए संघर्ष करती हैं और तीनों के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण अद्भुत है।

ध्रुवस्वामिनी इस नाटक की प्रमुख नारी पात्र है। यह शास्त्र की कील द्वारा एक क्लीव पुरूष से बंधी है। उस पर शासन किसी और का है पर यह अनुरागिनी किसी और की है। यह जगत की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी होते हुए एक क्लीव राजा के पास नियति के कुचक्रों से पहुंच जाती है। वह अन्तःपुर में बन्द है। जहाँ उसे एक भी सम्पूर्ण मनुष्य का निदर्शन नहीं मिलता और न ही खुल के सांस लेने का अवसर मिलता है। ध्रुवस्वामिनी चन्द्रगुप्त से प्रेम करती है। लेकिन पुरोहित विवाह रामगुप्त से करवा देता है। बाद में दासी द्वारा रामगुप्त को पता लगता है कि यह चन्द्रगुप्त को ही चाहती है। रामगुप्त ध्रुवस्वामिनी से अपने प्रेम के प्रतिस्वरूप प्रतिशोध का बदला लेने के लिए छलपूर्वक युद्ध की सन्धि में शकराज को अर्पित करना चाहता है। लेकिन ध्रुवस्वामिनी आत्म सम्मान के लिए ऐसा नहीं चाहती। इसलिए वह आत्महत्या करने के लिए कटार को अपने हाथ ले लेती है। तभी चन्द्रगुप्त वहाँ पहुँच जाता है और ध्रुवस्वामिनी को आत्महत्या करने से बचा लेता है:-

"सुनोगे? (ठहर कर सोचती हुई) नहीं, अभी आत्महत्या नहीं करूँगी ।जब तुम आ गये हो तो थोड़ा ठहरूंगी। यह तीखी छुरी इस अतृप्त हृदय में विकासोन्मुख कुसुम में विषैले कीट के इक डंक की तरह चुभा दूं या नहीं, इस पर विचार करूंगी। यदि नहीं तो मेरी दुर्दशा का पुरस्कार क्या कुछ और है? हाँ, जीवन के लिए कृतज्ञ, उपकृत और आभारी होकर किसी के अभिमानपूर्ण आत्म विज्ञापन का भार ढोती रहूँ-यही क्या विधाता का निष्ठुर विधान है? छुटकारा नहीं? जीवन नियति के कठोर आदेश पर चलेगा ही ? तो क्या यह मेरा जीवन भी अपना नहीं है"१

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 3, March 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1203019 |

ध्रुवस्वामिनी के प्रेम में उच्छृंखलता नहीं है वह धर्म के बन्धन को स्वीकार करती है पर धर्म के विधान में नारी के स्वत्व की, उसकी स्वतन्त्रता की, उसके सहयोग की रक्षा चाहती है। वह चाहती है कि नारी को अनुचित विवाह में जकड़ कर आनन्द को समाप्त न किया जाये ।जहाँ मिलन नहीं ,वहाँ आनन्द नहीं। वह पति राजाधिराज रामगुप्त के साथ रहकर भी प्रणय की भूखी है, वह विवश है। किसी अन्य पुरुष के प्रति आकर्षित होने के लिए चन्द्रगुप्त के आलिंगन के सुख की मादकता का वह इस प्रकार चित्रण करती है :-

"कितना अनुभूतिपूर्ण था वह एक क्षण का आलिंगन !कितने सन्तोष से भरा था। नियति ने अज्ञात भाव से मानों लू से तपी हुई वसुधा को क्षितिज के निर्जन से सांयकालीन शीतल आकाश में मिला दिया हो। "२

मंदाकिनी, ध्रुवस्वामिनी नाटक की स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली स्त्री पात्र है। नाटक में मन्दाकिनी के सम्बन्ध के विषय में पूरी जानकारी नहीं मिलती फिर भी चन्द्रगुप्त को 'भाई' शब्द से सम्बोधित करने के कारण ऐसा माना जाता है कि वह इसी वंश के ममत्व से सम्बंधित है। एक और वह रामगुप्त से घृणा करती है और चन्द्रगुप्त एवं ध्रुवस्वामिनी की सहायता करती है। वह रामगुप्त के व्यवहार से अत्यन्त क्षुब्ध है तथा ध्रुवस्वामिनी की पीड़ा से अत्यन्त व्यथित है। राजाधिराज रामगुप्त शत्रु को सन्धि में अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी को उपहार के रूप में शकराज को भेंटकर रहा है तो उस समय वह अपनी सारी शक्ति से नारी एवं राज्य के उद्धार में लग जाती है। चन्द्रगुप्त को राज्य दिलाने और उसकी अनुरागिनी के साथ उसे एक करने में ही उसे तोष है। राष्ट्र को वह अपने से बड़ा मानती है और उसके लिए अपनी कसक छिपा लेती है। अपनी समस्त शक्ति को रचानात्मक कार्य में लगाती है वह दूसरों के सुख में सुखी होना चाहती है। साथ ही दो हृदयों को एक करना चाहती है।

मन्दाकिनी नारी जीवन की विषमताओं से परिचित है जब शकराज की चन्द्रगुप्तके हाथों मृत्यु हो जाती है। उसकी प्रेमिका कोमा ध्रुवस्वामिनी से शकराज का शव लेने की प्रार्थना करती है तब मन्दाकिनी के मन में नारी जाति के प्रति होने वाले अत्याचारों का अन्तर्द्वन्द्व व्यक्त करती हुई मन्दाकिनी कहती है :-

"स्त्रियों के इस बलिदान का भी कोई मूल्य नहीं। कितनी असहाय दशा है। अपने निर्बल और अवलम्ब खोजने वाले हाथों से यह पुरुषों के चरणों को पकड़ती है और वह सदैव ही इनके तिरस्कार, घृणा और दुर्दशा को भिक्षा से उपकृत करता है। तब भी यह बावली मानती है।"३

प्रस्तुत नाटक में कोमा शकराज की भी प्रेमिका के रूप में चित्रित की गई है। यद्यपि वह एक भावुक नारी है। वह पुरुष के दर्प पर आसक्त होकर अपने को पुजारिन बना लेती है। वह प्रेम की परिभाषा नहीं जानती पर प्रेम के आवेग एवं उसके आलोक भी पहचानती है। प्रेम की दीवाली उसके हृदय में जलती है और वह अपना सर्वस्य दान कर देती है। यह प्रेम के लिए प्रेम करती है। वह प्रेम को अंधा मानती है। कोमा का अन्तर्द्वन्द्व उसके हृदय की सच्चाई और वास्तविक संसार से प्राप्त कठोर अनुभव के बीच का द्वंद्व है। विधाता का विचित्र विधान है, न उसे प्रेमी का आलिंगन मिला और न ही शव के साथ जल जाने का सुख ,कुछ भी नहीं मिला। कोमा का जीवन दुःखान्त है। कोमा अपने अन्तर्द्वन्द्व से अन्त में पलायन कर लेती है। शकराज के आचरण उसका हृदय दूर हट जाता है। जीवन में उसके लिए कोई आकांक्षा शेष नहीं रह जाती परन्तु वह शकराज को मृत्यु के पश्चात उसी के साथ समाप्त हो जाने का

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 3, March 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1203019 |

निश्चय करती है। कोमा करुणा की वह देवी है जो मानव के पुरुषार्थ पर, उसके दर्प पर उसके मानवत्व पर रीझकर अपने को समर्पित करती है - "मैं तो दर्प से दोस्त तुम्हारी महत्वमयी पुरुष मूर्ति की पुजारिन थी. जिसमें पृथ्वी पर अपने पैरों से खड़े रहने का दृढ़ता थी।"४

कोमा प्रणय की देवी है पर समर्पण के बदले उसे तिरस्कार ही मिला जिस पुरुष की उसने उपासना की, उसने ही विश्वासघात किया। प्रसाद मानते हैं कि जीवन का अन्त आनन्द में है। पर कोमा का अन्त अत्यन्त मर्मान्तक एवं कारूणिक है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि ध्रुवस्वामिनी नाटक में अत्यधिक अन्तर्द्वन्द्व नारी पात्रों में ही दृष्टिगोचर होता है। इस नाटक में तीन मुख्य नारी पात्र-ध्रुवस्वामिनी, मन्दाकिनी और कोमा विशिष्ट नारी पात्र है। जिनका दृष्टिकोण, स्वभाव, आदर्श आदि में परिवर्तन नहीं होता लेकिन तीनों ही नारी पात्र प्रेम के लिए संघर्ष करती हैं। ध्रुवस्वामिनी इस नाटक की प्रमुख नारी पात्र है। सभी नारी पात्रों में सबसे अधिक अन्तर्द्वन्द्व ध्रुवस्वामिनी में ही मिलता है। जो प्रेम किसी ओर से करती है और वागदत्ता पत्नी किसी और की है। नाटक के अन्त में ध्रुवस्वामिनी को चन्द्रगुप्त की प्रेमिका के रूप में चित्रित किया गया है। इसका अन्त सुःखान्त प्राप्त होता है लेकिन कोमा जो शकराज की प्रेमिका है ,जो प्रेम के लिए प्रेम करती है। कोमा का अन्त उसके हृदय की सच्चाई और वास्तविक संसार से प्राप्त कठोर अनुभव के बीच का द्वंद्व है। विधाता का विचित्र विधान है, न उसे प्रेमी का आलिंगन मिला और न ही शव के साथ जाने का सुख । अतः इसका अंत दुःखान्त ही रहा है।

अतः हम कह सकते हैं कि प्रसिद्ध महान् नाटककार जयशंकर प्रसाद जी नाट्य जगत में आन्दोलनकारी क्रांति लाने वाले युगपुरुष थे। उनका कविमय व्यक्तित्व स्वच्छन्दतावादी दृष्टिकोण, उनकी दार्शनिक, सांस्कृतिक चिन्तनधारा और युगीन संदर्भों की सूक्ष्म पकड़ से उनकी दृष्टि में एक ऐसी गम्भीरता और प्रौढ़ता का समावेश हो गया था जिसके कारण हिन्दी नाट्य साहित्य में पहली बार इतने सफल रूप में वे अन्तर्द्वन्द्व की नियोजना कर सके। अन्तर्द्वन्द्व का कोई भी क्षेत्र प्रसाद के नाटकों से अछूता नहीं रहा है। शेक्सपियर की समता यदि कोई हिन्दी नाटककार कर सकता है तो वह प्रसाद हैं। यदि प्रसाद जी की अकाल मृत्यु हुई होती तो उनके नाट्य शिल्प में अन्तर्द्वन्द्व के प्रयोग और पद्धति का जो विकास सामने आ रहा था, उससे वे हिन्दी साहित्य को निश्चय ही कुछ अन्य विश्वविख्यात नाट्य रचनाएं अवश्य प्रदान करते। वास्तव में प्रसाद जी एक महान् साहित्यकार थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

१.जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली (ध्रुवस्वामिनी) अंक १ , पृष्ठ संख्या ७५८

२. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली (ध्रुवस्वामिनी) अंक १ , पृष्ठ संख्या ७६०

३. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली (ध्रुवस्वामिनी) अंक १ , पृष्ठ संख्या ७७६

४. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली (ध्रुवस्वामिनी) अंक१ , पृष्ठ संख्या ७७०

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com